RNI No. RAJHIN/2014/58645
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/220/2018-20
e-paper : www.srushtiagronews.com

बांसवाड़ा की धरा पर लहलहाने लगी किनोवा की फसल

सृष्टि एग्रो

वर्ष -5 | अंक-1 | जयपुर 16 से 31 मार्च 2018 | मूल्य - 2 रुपए | पाक्षिक | पृष्ठ-8

रबी विपणन वर्ष 2018-19

गेहूं की खरीद 1735 रुपये प्रति क्विंटल होगी

जयपुर (कासं)। राज्य सरकार ने रबी विपणन वर्ष 2018-19 में भारत सरकार द्वारा गेहूं क्रय करने हेतु जारी न्यूनतम समर्थन मूल्य एक हजार 735 रुपये प्रति क्विंटल पर खरीद करने का लक्ष्य रखा है। राजस्थान राज्य खाद्य नागरिक आपूर्ति निगम के महाप्रबन्धक (वित्त) उम्मेद सिंह ने बताया कि कोटा सम्भाग में 15 मार्च, 2018 से तथा शेष सम्भागों में एक अप्रेल, 2018 से गेहूं क्रय करना प्रारम्भ होगा। राज्य में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत कुल वार्षिक आवश्यकता 27.00 लाख मै.टन है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2017-18 में न्यूनतम समर्थन मूल्य एक हजार 625 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित पर 12.45 लाख मै.टन की खरीद हुई थी। वर्ष 2018-19 में अनुमानित खरीद लगभग 17.50 लाख मै.टन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रबन्धक (वित्त) ने बताया कि किसानों की सुविधा को देखते हुए इस वर्ष गेहूं विक्रय हेतु पंजीकरण दोनों माध्यमों यथा- ऑनलाईन/ऑफलाईन की व्यवस्था की गई है। साथ ही क्रय केन्द्रों पर पारदर्शिता बनाये रखने हेतु सभी केन्द्रों पर विडियोग्राफी की व्यवस्था की जायेगी। सिंह ने बताया कि गेहूं क्रय हेतु एफ.सी.आई., राजफैड तथा तिलम-संघ को खरीद एजेंसी बनाया गया है। गेहूं क्रय हेतु प्रदेश में कुल 268 केन्द्र स्थापित किये गये हैं। इनमें से एफ.सी.आई. 153, राजफैड 102 तथा तिलम-संघ 13 केन्द्रों पर गेहूं क्रय करेगी।

कौशल प्रशिक्षण में राजस्थान का परचम फिर से लहराया

जयपुर (कासं)। कौशल प्रशिक्षण के क्षेत्र में अव्वल राज्य का नाम अर्जित कर चुके राजस्थान राज्य ने एक बार फिर इस क्षेत्र में अपना परचम लहराया है। ऐसोचैम एवं एमएसडीई (मिनिस्ट्री ऑफ स्किल डवलपमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप) द्वारा कौशल प्रशिक्षण के क्षेत्र में लगातार तीन वर्षों से सर्वश्रेष्ठ राज्य का पुरस्कार जीतने के बाद कौशल, नियोजन एवं उद्यमिता विभाग ने एक बार फिर नई दिल्ली में आयोजित स्कॉच अवाइर्स समिट में प्लेटिनम अवार्ड अपने नाम किया है। कौशल नियोजन एवं उद्यमिता मंत्री, डॉ. जसवंत सिंह यादव तथा आयुक्त एवं विशिष्ट सचिव, एसईई कृष्ण कुणाल ने चैयरमेन, स्कॉच ग्रुप समीर कोछर से यह सम्मान ग्रहण किया। डॉ. यादव ने इस अवसर पर कहा कि प्रदेश के युवाओं को कौशल प्रशिक्षण एवं रोजगार की अपार संभावनाओं से जोड़ने के लिए विभाग ने कई पहल की हैं। पिछले चार वर्षों में विभाग ने प्रदेश में न केवल 6.3 लाख से ज्यादा युवाओं को प्रशिक्षित किया है, बल्कि उन्हें कौशल प्रशिक्षण के कई नए क्षेत्रों जैसे फड़ पैंटिग्स, थेरपेटिक स्पा आदि से भी जोड़ा है। कृष्ण कुणाल ने कहा कि राजस्थान ने ही देश को उसका प्रथम कौशल विश्वविद्यालय, प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि इसी के साथ प्रदेश कुल 1943 आईटीआई के प्रबल नेटवर्क के साथ देश में दूसरे स्थान पर है और अब प्रदेश में आईटीआई की शमता बढ़कर 3.87 लाख हो गई है।

समृद्ध किसान–खुशहाल राजस्थान
किसान हित में सरकार के बड़े फैसले

श्रीमती वसुन्धरा राजे
माननीया मुख्यमंत्री

डॉ.प्रभुलाल सैनी
माननीय कृषि मंत्री

उन्नत बीज, तकनीकी, जैविक खेती को बढावा
- ★ 7 लाख किसानों को बीज मिनीकिट
- ★ साढे तीन लाख किसानों के खेतों पर फसल प्रदर्शन
- ★ जैविक खेती के लिए तीन लाख किसानों को तीन वर्ष तक अनुदान

जल संरक्षण हेतु अनुदान में वृद्धि
- ★ डिग्गी के लिए तीन लाख रूपये तक, फार्म पौण्ड पर 63 हजार , जल हौज पर 90 हजार रूपये तक अनुदान

सुविधाओं का विकास
- ★ 750 कस्टम हायरिंग सेन्टर की स्थापना- वाजिब किराये पर कृषि यंत्र के साथ स्वरोजगार के अवसर
- ★ आर.ए.सी.पी. योजना में किसानों को मिलेगी 312.71 करोड़ की सहायता
- ★ 700 किसान सेवा केन्द्रों का सुदृढीकरण

महिलाओं का रखा ध्यान
- ★ साढे तीन लाख महिला कृषकों को किया जायेगा प्रशिक्षित
- ★ कृषि छात्राओं के लिए सात करोड़ की मिलेगी प्रोत्साहन राशि

नई पहल
- ★ उपज के अधिकतम लाभ के लिए किसान उत्पादक कम्पनियों का गठन
- ★ प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना होगी डिजिटलाईज-कार्मिकों को स्मार्ट फोन
- ★ गांव वार खाद व उर्वरक की सिफारिशे मिलेंगी कृषि पोर्टल पर

राजस्थान संवाद

कृषि विभाग, राजस्थान द्वारा कृषक हित में प्रसारित

सम्पादकीय

बेहतर जल प्रबंधन

सिंचाई देश की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा है। फिर भी देश के लाखों किसानों को यह सेवा सही ढंग से नहीं मिल पाती। कुल बुआई रकबे के एक तिहाई में ही बेहतर और मध्यम प्रकृति की सिंचाई हो पाती है। वर्ष 2011-12 में सिंचाई कुल संभव क्षमता से 23 फीसदी कम रही। क्या किसान सिंचाई के क्षेत्र में बेहतर सेवाओं की उम्मीद कर सकते हैं? क्या आर्थिक सक्षमता को सामाजिक समानता से सामंजस्य भरा बनाया जा सकता है? सन 1995 से ही एक्सिलरेटेड इरीगेशन बेनीफिट्स प्रोग्राम ने सिंचाई क्षमता में पूंजी निवेश बढ़ाया। कमजोर रखरखाव और सेवा का अर्थ यह था कि बड़े पैमाने पर सिंचाई क्षमताओं का पूरा इस्तेमाल नहीं हो रहा था। किसान लगातार भूजल पर निर्भर बने रहे। देश में सिंचाई की कुल जरूरतों का 60 फीसदी अभी भी भूजल से पूरा होता है। भारत इस वक्त स्थायित्व और समता की जरूरत के संकट का शिकार है। भारत सालाना 251 अरब घन मीटर भूजल का दोहन करता है। जिसमें से अधिकांश का इस्तेमाल सिंचाई के लिए किया जाता है। जबकि चीन और अमेरिका में यह 112 अरब घन मीटर ही है। उत्तर भारत, पश्चिमोत्तर भारत और दक्षिण भारत के कई हिस्सों में सालाना जितना भूजल रिचार्ज नहीं होता, उससे ज्यादा निकाल लिया जाता है। परंतु भूजल तक पहुंच में एक कोण समता का भी है। छोटे और सीमांत किसानों के लिए भूजल सिंचाई का एक तैयार स्रोत है क्योंकि सतह पर बनी नहरों से पानी कभी मिलता है तो कभी नहीं मिलता है। इससे कहीं अधिक बेहतर खेती की पृष्ठभूमि बनती है। किसान साल में कई फसल बो पाते हैं। नहरों का बुनियादी ढांचा कमजोर होने से उसमें जो लीकेज होता है वह भी भूजल रिचार्ज में मदद करता है। ऐसे में हालांकि नहरों का ढांचा निवेश पर कम प्रतिफल देता है लेकिन किसानों ने भूजल आधारित कृषि व्यवस्था ही अपना रखी है। यह समता संयोगवश है, न कि योजनाबद्ध। इस बीच बड़े पैमाने पर सिंचाई की बात करें तो उस क्षेत्र में परिचालन और रखरखाव में कम निवेश समस्या बना हुआ है। इस क्षेत्र में परिचालन और रखरखाव के लिए 1,175 रुपये प्रति हेक्टेयर का स्पष्ट मानक है, जबकि वास्तविक व्यय 5,000 रुपये प्रति हेक्टेयर तक होता है। चाहे जो भी हो लेकिन रखरखाव और परिचालन पूंजीगत व्यय से कदमताल नहीं कर सका है। वर्ष 2010 के मूल्यों के अनुसार देखें तो पूंजीगत व्यय सन 1995-96 के 126 अरब रुपये से बढ़कर 2011-12 में 312 अरब रुपये हो गया था जबकि परिचालन और रखरखाव में ज्यादा इजाफा नहीं हुआ और यह 110 अरब रुपये से बढ़कर केवल 172 अरब रुपये ही हुआ। कुल परिचालन और रखरखाव व्यय में सुधार का व्यय घटकर केवल 2 फीसदी रह गया। जबकि 10वीं योजना के अंत तक अन्य व्यय बढ़कर 73 फीसदी हो गए। कुछ भारतीय राज्यों में किसानों से पानी के लिए कोई शुल्क वसूल नहीं किया जाता। बाकी के राज्यों में से भी अधिकांश ने पिछली बार इनमें संशोधन 2005 के आसपास किया था। जबकि इनमें हर पांच साल में संशोधन करने की अनुशंसा पहले से है। औसतन देखें तो उपभोक्ता शुल्क से परिचालन और रखरखाव पर होने वाले व्यय का बमुश्किल 20 फीसदी ही वापस मिलता है। अगर बुनियादी ढांचे का रखरखाव ही खराब ढंग से किया गया हो तो उसका परिणाम भी कमजोर सेवाओं के रूप में ही सामने आता है। इतना ही नहीं इसके चलते कमजोर प्रतिफल और कमतर आय का एक दुष्चक्र बन जाता है और किसान भी अविश्वसनीय सेवाओं के लिए किसी भी तरह का भुगतान करने से बचते हैं। पानी से लाभ कमाने की कोशिश करने के बजाय भारत का सबसे विशाल सिंचाई तंत्र आर्थिक नुकसान का सबब बना हुआ है। इस चक्र को बदला जा सकता है। सबसे पहले, किसानों को केंद्र में रखकर सिंचाई सेवा आपूर्ति का आकलन करना होगा। केवल मुख्य नहर से वितरण नहर तक होने वाली जलापूर्ति की किफायत के बारे में विचार करने के बजाय पूरा ध्यान कृषि उत्पादकता का आकलन करने पर ध्यान देना चाहिए। यानी पानी की उपलब्धता के अनुपात में उत्पादन में अधिक से अधिक बढ़ोतरी करने का प्रयास किया जाना चाहिए। ऐसा करने से किसानों की आय बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। इस रुख से कम से कम यह पता चलना चाहिए कि खराब व्यवस्था से होने वाले नुकसान से कैसे बचा जा सकता है। साथ ही इससे सतह और भूजल के बेहतर इस्तेमाल कैसे सुनिश्चित हो सकता है यह भी देखना होगा। प्रदर्शन के संकेतकों में सिंचाई की पर्याप्तता, विश्वसनीयता और समयबद्धता के साथ समता, आर्थिक उत्पादकता और पर्यावरण निरंतरता का स्थान होना चाहिए। इसके लिए कहीं अधिक सक्रिय प्रबंधन सूचना तंत्र की आवश्यकता है जहां परिसंपत्ति प्रबंधन की योजना के लिए डेटा मौजूद हो, बजाय कि केवल सतह पर बह रही नहरों के। दूसरा, परिचालन एवं रखरखाव का निर्धारण आकार, डिजाइन, स्थान, उपयोग के रुझान, तंत्र की उम्र, विनिर्माण गुणवत्ता आदि को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। इंजीनियरिंग और विनिर्माण अनुबंधों को परिचालन एवं रखरखाव से पांच साल के लिए जोड़ा जाना चाहिए। इसकी लागत निकालने के लिए किसानों को इस प्रक्रिया में भागीदार बनाना होगा। अगर शुल्क शुरुआत में कम हों तो भी उनके संग्रह की उच्च लागत के साथ अनुबंधित व्यवस्था करने में उनका मूल्यवर्धन होता है। इससे सेवा के बदले भुगतान का माहौल बनता है। प्राप्त राजस्व को सिंचाई व्यवस्था में दोबारा निवेश करना चाहिए, बजाय कि उसे सब्सिडी के रूप में वापस करने के। तीसरी बात, संस्थानों का डिजाइन काम करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। सिंचाई व्यवस्था को कौन तैयार करता है, इसका स्वामित्व किसके पास है और इसका नियमन किसके पास है ये सारी बातें मायने रखती हैं। जरूरी नहीं कि एक ही एजेंसी के पास यह सारा कौशल हो। यह निरंतर एक चुनौती बनी रही है। सिंचाई विभागों में इंजीनियरिंग और प्रबंधन के मिलेजुले लोगों की आवश्यकता है। कृषि जल प्रबंधन को भी एकल से विविध गतिविधियों वाला बनाना होगा।

हल्दी के लाभकारी उपयोग

संतरा हरितवाल, विवेक शर्मा, वर्षा गुप्ता
विद्यावाचस्पति छात्रों,पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी विभाग, एस. के. एन. कृषि महाविद्यालय, जोबनेर,
विद्यावाचस्पति छात्रा, शस्यविज्ञान राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

हल्दी न केवल एक मसाला है, बल्कि इसमें कई औषधीय गुण भी हैं। सौंदर्य प्रसाधनों में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है।

हल्दी के स्वास्थ्य लाभ: हल्दी न केवल एक मसाला है, बल्कि इसमें कई औषधीय गुण भी हैं। सौंदर्य प्रसाधनों में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। त्वचा, पेट और आघात आदि से उबरने में हल्दी अत्यंत उपयोगी होती है।

लीवर संबंधी समस्याओं में लाभकारी: लीवर की तकलीफों से निजात पाने के लिए हल्दी बेहद उपयोगी होती है। यह रक्त दोष दूर करती है। हल्दी नैसर्गिक तौर पर ऐसे एन्जाइम्स का उत्पादन बढ़ाती है जिससे लीवर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में मदद मिलती है।

दाग-धब्बों से छुटकारा: दाग-धब्बे और झाइयां हटाने में हल्दी का कोई सानी नहीं। हल्दी और काले तिल को बराबर मात्रा में पीसकर पेस्ट बनाकर लगाने से त्वचा साफ और निखरी हो जाती है। हल्दी और दूध से बना पेस्ट भी त्वचा का रंग निखरने और चेहरे को खिला-खिला रखने के लिए बहुत असरदार होता हैं।

मजबूत इम्यून सिस्टम: शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में इजाफा करती है हल्दी। इससे शरीर कई बीमारियों से बचा रहता है। हल्दी में पाया जाने वाला लिपोपोलिसेकराईड तत्व हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाकर बीमारियों से हमारी रक्षा करता है। साथ ही इसमें एन्टी बैक्टीरियल, एंटी वायरल और एंटी फंगल गुण भी विशेष रूप से पाए जाते है।

अनचाहे बाल हटाएं: अगर आप अनचाहे बालों से परेशान है तो हल्दी का प्रयोग करें। अनचाहे बालों को हटाने के लिए हल्दी पाउडर को गुनगुने नारियल तेल में मिलाकर पेस्ट बना लें। अब इस पेस्ट को अनचाहे बालों पर लगाएं। इस उपाय से शरीर के अनचाहे बाल धीरे-धीरे हट जाते हैं और त्वचा कोमल हो जाती हैं।

दूर करें सनबर्न: हल्दी सनस्क्रीन लोशन की तरह काम करता है। अगर धूप के कारण आपकी त्वचा में टैनिंग हो गई है तो टैन से निजात पाने के लिए बादाम पेस्ट, हल्दी व दही मिला उसे त्वचा पर लगाकर छोड़ दें और फिर पानी से धो लें। इससे टैनिंग खत्म हो जाएगी। साथ ही त्वचा में निखार भी आएगा।

संक्रमण से बचाएं: हल्दी में पाया जाने वाले करक्यूमिन नामक तत्व के कारण कैथेलिसाइडिन एंटी माइक्रोबियल पेप्टाइड (सीएएमपी) नामक प्रोटीन की मात्रा बढ़ती है। सीएएमपी प्रोटीन शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। यह प्रोटीन बैक्टीरिया और वायरस से लड़ने में शरीर की मदद करता है।

पेट की समस्याओं में लाभकारी: मसाले के रूप में प्रयोग की जाने वाली हल्दी का सही मात्रा में प्रयोग पेट में जलन एवं अल्सर की समस्या को दूर करने में बहुत ही लाभकारी होता है। हल्दी का पीला रंग कुरकमिन नामक अवयव के कारण होता है और यही चिकित्सा में प्रभावी होता है। चिकित्सा क्षेत्र के मुताबिक कुरकमिन पेट की बीमारियों जैसे जलन एवं अल्सर में काफी प्रभावी रहा है।

दंत रोगों में गुणकारी: दांतों की स्वस्थ और मसूड़ों को मजबूत बनाने के लिए हल्दी का प्रयोग करें। इसके लिए थोड़ी सी हल्दी, नमक और सरसों का तेल लेकर मिला लें। अब इस मिश्रण से दांतों और मसूड़ों में अच्छे से मसाज करें। इस उपाय से सूजन दूर होती है और दांत के कीड़े खत्म हो जाते हैं

अंदरूनी चोट में सहायक : चोट लगने पर हल्दी बहुत फायदा करती है। मांसपेशियों में खिंचाव होने पर या अंदरूनी चोट लगने पर हल्दी मिला गर्म दूध पीने से दर्द और सूजन में तुरन्त राहत मिलती है। चोट पर हल्दी और पानी का लेप लगाने से भी आराम मिलता है।

खांसी में राहत: खांसी में हल्दी की गांठ का इस्तेमाल करें। अगर एकदम से खांसी आने लगे तो हल्दी की एक छोटी सी गांठ मुंह में रख कर चूसें, इससे खांसी नहीं आएगी। खांसी के साथ कफ की समस्या होने पर एक गिलास गर्म दूध में एक-चौथाई चम्मच हल्दी मिलाकर पीना फायदेमंद है।

सहकारी बैंकों में 906 पदों पर अप्रेल माह में मांगे जायेंगे आवेदन

जयपुर। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि अपेक्स बैंक, जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों एवं प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों के 906 पदों पर अप्रेल माह में अभ्यर्थियों से आवेदन पत्र आमंत्रित किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि जुलाई माह तक भर्ती प्रक्रिया को पूर्ण कर लिया जायेगा। किलक ने बताया कि अपेक्सबैंक में सीनियर मैनेजर के 6, मैनेजर के 12 व बैंकिंग सहायक के 25 सहित कुल 43 पदों पर, जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों में मैनेजर के 92, कम्प्यूटर प्रोग्रामर के 7 व बैंकिंग सहायक के 437 पदों सहित कुल 536 पदों पर तथा प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों में मैनेजर के 57 व बैंकिंग सहायक के 92 पदों सहित कुल 149 पदों पर भर्ती होगी। उन्होंने बताया कि राजस्थान सहकारी भर्ती बोर्ड के माध्यम से भर्ती की जायेगी। प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता अभय कुमार ने बताया कि भर्ती बोर्ड द्वारा भर्तियों का वर्गीकरण कर लिया गया है और भर्ती की प्रक्रिया के लिये ऑनलाइन आवेदन मांगे जायेंगे।

सहकारी समितियों के संचालक एवं अध्यक्ष आगामी दो अवधियों के लिए लगातार चुने जा सकेंगे

जयपुर। राज्य विधानसभा ने राजस्थान सहकारी सोसाइटी (संशोधन) विधेयक, 2018 ध्वनिमत से पारित कर दिया। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने सदन में विधेयक प्रस्तुत किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि सहकारी अधिनियम में वर्ष 2016 में हुए संशोधन के पश्चात् अब सहकारी संस्थाओं के निर्वाचित संचालक एवं अध्यक्ष आगामी दो अवधियों के लिए लगातार उसी सोसायटी में निर्वाचित हो सकेंगे। यह प्रावधान उन निर्वाचित प्रतिनिधियों के उपर लागू होगा जिनका निर्वाचन वर्ष 2016 में हुए संशोधन के पश्चात हुआ है। किलक वर्ष 2016 में सहकारिता अधिनियम की धारा 28 में संशोधन कर धारा 28(7-क) को जोड़ने पर किए गए प्रावधान को स्पष्ट कर रहे थे। कतिपय लोगों के मन में यह संशय उत्पन्न हुआ कि यह संशोधन पूर्व में दो बार से अधिक अवधियों से निर्वाचित रहे संचालकों एवं पदाधिकारियों को वंचित तो नहीं कर देगा। किलक ने बताया कि इस दृष्टि से धारा 28(7-क) में यह संशोधन प्रस्तावित किया है कि अब कोई भी व्यक्ति सोसायटी के संचालक मण्डल में वर्ष 2016 में हुए अधिनियम संशोधन के बाद लगातार उसी सोसायटी में दो अवधियों से अधिक के लिए चुनाव नहीं लड़ सकेंगे।

मसूर की खेती के लिए उन्नत तकनीक

उपेन्द्र कुमार बागड़ी, विमल नागर, ओमप्रकाश शर्मा एवं अशोक मीणा,स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

मसूर एक मूल्यवान मानव भोजन है, जो दाल के रूप में प्रयोग होती है। उच्च जैविक मूल्य के साथ इसे आसानी से पकाया जा सकता है मसूर में प्रोटीन-24-26प्रश., कार्बोहाइड्रेट - 57 - 60प्रश., फैट - 1.3 प्रश., फाइबर - 3.2प्रश., फास्फोरस - 300 मिलीग्राम/100 ग्राम, आयरन-7 मिलीग्राम/100 ग्राम, विटामिन सी-10-15 मिलीग्राम/100 ग्राम, कैल्शियम - 69 मिलीग्राम/100 ग्राम एवं विटामिन ए - 450 आईयू पोषक तत्व पाऐ जाते है। सूखे पत्ते, और टूटी फली को पशु चारा के रूप में उपयोग किया जाता है।

मसूर का पौधा

मसूर की उत्पादकता क्रोएशिया में सबसे अधिक उत्पादकता दर्ज की गई है (2862 किलोग्राम/ हेक्टेयर), इसके बाद न्यूजीलैंड (2496 किलो / हेक्टेयर)। भारत की उत्पादकता (611 किलोग्राम / हेक्टेयर) की तुलना में कनाडा की उत्पादकता (1633 किलो प्रति हेक्टेयर) के उच्च स्तर की वजह से कनाडा उत्पादन में प्रथम स्तर पर है (एफएओ स्टेटस, 2014)।

बारहवीं योजना (2012-15) के दौरान देश में मसूर के क्षेत्र में 14.79 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में 10.38 लाख टन मसूर का उत्पादन हुआ। मसूर के प्रमुख उत्पादक राज्य मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल , झारखंड है। ।

मसूर के लिए मिट्टी और खेत की तैयारी:

अच्छी तरह से सूखा, तटस्थ प्रतिक्रिया के साथ भुरभुरी मिट्टी मसूर की खेती के लिए सबसे अच्छा है। अम्लीय मिट्टी मसूर के लिए उपयुक्त नहीं हैं एवं बुआई समान गहराई पर किया जानी चाहिए।

मसूर बुवाई का समय

मध्य और दक्षिण भारत में अक्टूबर के पहले पखवाड़े और उत्तर भारत में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े, सिंचाई की शर्तों के तहत- उत्तर भारत में नवंबर के पहले पखवाड़े

मसूर बुवाई व बीज की दर:

40-45 किलोग्राम / हेक्टेयर, बोल्ड वरीयता प्रास: 45-60 किलो / हेक्टेयर, देर से बुआई : 50-60 किग्रा / हेक्टेयर, यूटेरा फसल: 60-80 किग्रा / हेक्टेयर बीजों की सिफारिश की जाती है।

बोने में 30 सेमी की पंक्तियों में किया जाना चाहिए अलग और इसे कम गहराई (3-4 सेमी) पर बोया जाना चाहिए। यह फर्टि-बी-ड्रिल का उपयोग करके या देसी हल के पीछे सीडिंग द्वारा किया जा सकता है।

मसूर बीज उपचार: थीरम (2 ग्राम) + कारबेन्डाजिम (1 ग्राम) या थिरम @ 3 ग्राम या कार्बेडाजिम @ 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज का;

कीटनाशक: क्लोरोपीरीफोस 20 ई.सी. @ 8 एमएल। / किग्रा बीज का;

संस्कृति: राइज़ोबियम + पीएसबी, प्रत्येक 10 किलो बीज के लिए एक पैकेट।

उन्नत किस्में : विल्ट प्रतिरोधी / सहिष्णु- आरवीएल -31, आईपीएल 81, आईपीएल -316, शेखर मसूर -2, शेखर मसूर -2 I5. जंग प्रतिरोधी / सहिष्णु -आईपीएल -406, डब्ल्यूबीएल -77, पंत एल -6, पंत एल -7, शेखर मसूर -2, शेखर मसूर -2, आईपीएल -316।

मसूर आधारित फसल प्रणाली:

धान - दाल
मक्का - मसूर
कपास - मसूर
बाजरा - मसूर
ज्वार - मसूर
मूंगफली - मसूर

मसूर फसल में इन्टरक्रोप्पिंग

-मसूर + गन्ने (शरद ऋतु) गन्ने के दो पंक्तियों के बीच में 30 सेमी पंक्ति अंतर में दाल की दो पंक्तियों के साथ

-मसूर + सरसों (2: 6)

मसूर में सिंचाई

पहली सिंचाई, रोपण के 40 से 45 दिन और पोड भरने के चरण में दूसरे पर दी जानी चाहिए। नमी तनाव के लिए सबसे महत्वपूर्ण चरण फली गठन है। सर्दियों के वर्षा की अनुपस्थिति में और जहां मिट्टी की नमी का योगदान नगण्य है मध्य भारत में, महत्वपूर्ण उपज सुधार के लिए दो प्रकाश सिंचाई लागू की जा सकती है। अधिक सिंचाई फसल प्रदर्शन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती है।

पौधे पोषक प्रबंधन :

सामान्यत 20 किलो नाइट्रोजन। फास्फोरस 40 किलो और 20 किलो सल्फर प्रति हेक्टेयर में मध्यम उपजाऊ मिट्टी में बेसल ड्रेसिंग के रूप में।

माध्यमिक और सूक्ष्म पोषक तत्व

1. सल्फर ओर को मध्यम काली मिट्टी और सैंडी लोम मिट्टी में प्रत्येक फसल के लिए बेसल के रूप में 20 किलो प्रती हेक्टेयर (154 किलोग्राम जिप्सम / फॉस्फो-जिप्सम / या 22 किलो बेंटोनिट सल्फर के बराबर) डालते हैं।

2. बोरान के लिए बेसल के रूप में 1.6 किलो प्रति हेक्टेयर (16 किलो बोरैक्स/11 किलो डाय-सोडियम टाट्रा बोराट पेंटा-हाइड्रेट) लागू करें।

खरपतवार नियंत्रण

दो मैनुअल वीडिंग, 25-30 दिनों में एक और बुवाई के बाद 45-50 दिनों के बाद दूसरा होना चाहिए।

पैंडिमथेलिन 30 ईसी @ 0.75-1 किग्रा ए.आई. प्रति हेक्टेयर का उपयोग पूर्व-उद्भव उपचार के रूप में किया जा सकता है। 45-60 दिनों की एक खरपतवार मुक्त अवधि महत्वपूर्ण है।

पौध संरक्षण

मसूर के रोग:

सीडलिंग मोर्टेलिटी : यह कवक के कारण होता है यह बीज बोने के एक महीने के भीतर प्रकट होता है और रोपाई सूखने शुरू होती है।

कॉलर रॉट:

-इसे मध्य नवंबर तक देर से रोपण के द्वारा कम किया जा सकता है।

-बीज के साथ प्रणालीगत कवकनाशी कार्बेन्डाजिम @ 2.5 ग्रा / किग्रा बीज के बीज का इलाज करें।

-पाँट एल-406 आदि जैसे संयंत्र प्रतिरोधी किस्म

विल्ट:

यह मसूर की गंभीर बीमारी है जिसमें संयंत्र की वृद्धि की जांच की जाती है, पत्ते पीले होते हैं, पौधे सूखने लगते हैं और अंत में मर जाते हैं। प्रभावित पौधों की जड़ें विकसित होती हैं और हल्के भूरे रंग के रंग में दिखती हैं।

नियंत्रण उपाय

-क्षेत्र को साफ रखें और तीन साल की फसल रोटेशन का पालन करें। इससे रोग की घटनाओं को कम करने में मदद मिलेगी।

-पंत लेंटिल 5, आईपीएल -316, आरवीएल -31, शेखर मसुर 2, शेखर मसूर 3 आदि जैसे सहिष्णु और प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करें।

जंग :

बीमारी के लक्षण, पत्तियों और फली पर पीले रंग के पेस्टूल के रूप में शुरू होते हैं। बाद में हल्के भूरे रंग के पत्ते पत्तियों और पौधों के अन्य हवाई भागों दोनों सतहों पर दिखाई देते हैं। पुस्टूल अंततः गहरे भूरे रंग के होते हैं। पौधे मैदान में पैच के रूप में दिखाई देने वाले गहरे भूरे या काले रंग की उपस्थिति देते हैं।

नियंत्रण उपाय

-फसल के बाद, प्रभावित संयंत्र कचरा जला जाना चाहिए।

-एनईपीजेड में, सामान्य और शुरुआती बुवाई में जंग के रोग की तीव्रता कम हो जाती है।

-डीपीएल 15, नरेंद्र लेंटिल -1, आईपीएल 406, हरियाणा मसूर 1, पंत एल -6, पंत एल -7, एलएल-931, आईपीएल 316 जैसे प्रतिरोधी / सहिष्णु किस्मों को बढ़ाएं।

-बीज उपचार मैनकोज़ेब 75 WP @ 0.2 प्रश. (2 ग्रा / लीटर) के साथ फसल स्प्रे करें। बुवाई के बाद 50 दिनों में 1-2 स्प्रे जंग को नियंत्रित करने के लिए अच्छा है।

मसूर के कीट

पॉड बोरर

क्षति की प्रकृति : कैटरपिलर निविदा के पत्तों को हटा देता है और हरी फली को भी खाता है और पकने वाले अनाज पर फीड करता है। यह गंभीर क्षति के मामले में लगभग सभी अंगों को नुकसान पहुंचाता है, भारत में लगभग 25-30 प्रश. वार्षिक उपज नुकसान का कारण बनता है नियंत्रण

उपाय

-स्प्रे नीम बीज निकालने (5प्रश.) @ 50 मिलीलीटर / लीटर पानी।

-प्रोफेन्फोस 50 ईसी @ 2 मिलीलीटर लीटर या एम्मामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 0.2 ग्रा / लीटर पानी के स्प्रे।

एफिड

नुकसान की प्रकृति : एफिड रस चूसते हैं और गंभीर क्षति के मामले में पादप विकास दब जाता है।

नियंत्रण उपाय

-डीमेथोएट 30 ईसी @ 1.7 मिलीग्राम / लीटर या इमिडाक्लोपिड 17.8 एसएल @ 0.2 एमएल / लीटर पानी के स्प्रे।

मसूर कटाई एवं भंडारण

जब पत्तियां गिरने लगती हैं, स्टेम रंग में भूरा पड़ जाता है और उनके अंदर 15 प्रश. नमी के साथ कठोर और खड़खड़ होता है तब फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती हैं । अगर कटाई में देरी के कारण बीज नमी 10प्रश. से नीचे गिरती है तो फली टूटने लगती है और बीज बिखरने लगता है । फसल को काटने के उपरांत पर 4-7 दिनों के लिए सूखने की अनुमति दी जानी चाहिए और मैन्युअल रूप से या थ्रेशर लगता बीज निकालना चाहिए। साफ बीज को सूरज में 3-4 दिनों तक सूखने के लिए 9-10प्रश.नमी लाने के लिए होना चाहिए।

बीजों को उचित डिब्बे में सुरक्षित रूप से संग्रहित किया जाना चाहिए और उन्हें भण्डारण कीट से बचाने के लिए सील्ड होना चाहिए।

मसूर की उपज

एक अच्छी फसल की पैदावार प्रति हेक्टेयर में लगभग 15-20 क्विंटल अनाज होती है।

उच्च उत्पादन हासिल करने के लिए मुख्य सुझाव

1. गुनी एवं प्रमाणित बीजों का उपयोग करना चाहिए।

2. बुवाई के पहले बीज उपचार किया जाना चाहिए।

3. उर्वरक का आवेदन मिट्टी परीक्षण मूल्य पर आधारित होना चाहिए।

4. संयंत्र संरक्षण के लिए एकीकृत दृष्टिकोण को अपनाना।

5. खरपतवार नियंत्रण सही समय पर किया जाना चाहिए।

6. फसल उत्पादन की तकनीकी जानकारी के लिए कृपया जिला कृषि विज्ञान केंद्र / नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र से संपर्क करें।

'सरसों एवं राई की फसल की कटाई वर्षा और आद्रता के समय पर नहीं करें'

जयपुर (कासं)। सरसों और राई की फसल कटाई, गहाई और भंडारण सही समय पर करने से इनको बीजों के भार और उनमें तेल के अंश की मात्रा को बचाया जा सकता है। देश के विभिन्न भागों में सरसों और राई की फसलें अलग-अलग समय पर पकती हैं। सरसों और राई उत्पादक प्रमुख राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा व उत्तर प्रदेश में ये फसल फरवरी-मार्च तक काटी जाती हैं। सरसों और राई फसल के कटाई का समय, बुआई की तिथि, उगाई गई किस्म के प्रकार, प्रबंध की कार्य विधियां और खेती के स्थान पर निर्भर करता है। भरतपुर स्थित सरसों अनुसंधान निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने बताया कि सही समय पर कटाई करने से फलियों से बीज बिखरने, हरे बीज की समस्या तथा कम तेल अंशक युक्त सिकुड़े हुए बीजों के कारण होने वाली हानि से बचा जा सकता है।

उचित अवस्था : सरसों व राई की फसल कटाई के लिए सबसे उचित अवस्था तब होती है, जब 75 प्रतिशत फलियां पीली पड़ जाती हैं और बीज नमी लगभग 30-35 प्रतिशत होती है। इस अवस्था में अंगुलियों के बीच दबाने पर अधिकांश बीज कठोर महसूस होते हैं और 30 से 40 प्रतिशत बीज हरे रंग से अपने प्राकृतिक रंग (भूरे या पीले) में परिवर्तित होना शुरू कर देते हैं।

मौसम कैसा हो : कटाई ऐसे समय नहीं की जानी चाहिए, जब वायु की आपेक्षित आद्रता अधिक हो और वर्षा हो रही हो। वायु की आपेक्षित आद्रता बीजों के आद्रता अंश को नियंत्रित करती है।

कटाई और गहाई : सरसों और राई की कटाई सामान्यत: दरांती से की जाती है। दरांती से कटाई पौधों में लगभग 15 सेमी तक ऊंचाई पर ठूठों को छोड़ते हुए की जाती है। इन फसलों की कटाई के लिए बैल या ट्रैक्टर चालित हार्वेस्टर या रीपर भी उपलब्ध है। कटाई करने से पहले खेत से सत्यनाशी के पौधों को उखाड़ लेना चाहिए, क्योंकि उसके बीज जहरीले होते हैं तथा इसके बीजों को सरसों आदि फसलों के बीजों से अलग करना कठिन होता है। सामान्यत: फसल की गहाई उस समय करनी चाहिए जब बीज का औसत आद्रता अंश 12 से 20 प्रतिशत पहुंच जाए।

अजोला से बीस फीसदी तक दूध उत्पादन बढ़ा सकते हैं पशुपालक

भरतपुर (विसं)। मौसम में लगातार आ रहे बदलाव, कृषि लागत बढ़ने और भूजल की उपलब्धता में आ रही कमी को देखते हुए परंपरागत खेती का कार्य अब अधिक आमदनी वाला नहीं रहा। ऐसी स्थिति में किसान खेती के साथ पशुपालन करें तो आर्थिक समृद्धि में यह काम सहायक हो सकता है। पशुपालन में भी किसानों को पशुआहार की लागत कम करनी होगी। इसमें अजोला काफी हद तक सहायक है, जो दुग्ध उत्पादन को करीब 15-20 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक साबित हुआ है। अजोला जलीय फर्न है जो जलीय क्षेत्रों में हरा, नीला-हरा या गहरे लाल रंग में फैला होता है। अजोला में वेलवेट की तरह छोटे-छोटे बालों के गुच्छे होते हैं। वैसे इसे एक प्रकार की जलीय खरपतवार माना जाता है लेकिन इसमें पौषक तत्वों की भरमार होने से यह पशुओं में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के साथ उनके स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है। अजोला के उत्पादन में 50 पैसे प्रति किलो की लागत आती है जो दलहनी हरे चारे वाली फसलें बरसी, रिजका आदि के मुकाबले बहुत कम है। इसका उत्पादन लेना भी काफी सरल है। उत्पादन के लिए 1 फुट गहरा, 3 फुट चौड़ा और 20 फुट लंबा गड्ढा तैयार कर उसमें कंकर-पत्थर के मोटे टुकड़े डालकर इसे समतल बना दिया जाता है। दीवार के सहारे पॉलीथीन शीट लगा दी जाती है।

4 लाख की कीमत का मिनी ट्रैक्टर किसानों को अनुदान पर मिलेगा 1.40 लाख रुपए में

धौलपुर (विसं)। किसान के लिए सब से ज्यादा जरूरी ट्रैक्टर होता है, लेकिन महंगा होने से हर किसान ट्रैक्टर खरीद नहीं पाता। छोटे से छोटा ट्रैक्टर कम से कम 4 लाख से शुरू होता है, लेकिन अब राज्य सरकार की राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्धात्मक परियोजना के तहत प्रदेश के धौलपुर सहित 17 जिलों के छोटे व प्रगतिशील किसानों के लिए पहली बार अनुदान पर मिनी ट्रैक्टरों की सौगात मिली है।

अनुदानित दर पर इस ट्रैक्टर के लिए किसान को एक लाख 40 हजार रुपए देने होंगे, जबकि इस मिनी ट्रैक्टर की कीमत 4 लाख रुपए तक है। इस परियोजना में किसानों को पहले आओ पहले पाओ और लॉटरी के माध्यम से ट्रैक्टर प्रदान किए जा रहे हैं। धौलपुर में 3 प्रगतिशील किसानों तेजसिंह उमरेह बाड़ी, महेंद्रसिंह पुरा मदारी और पातीराम कुलेका का पुरा को मिनी ट्रैक्टर दिए गए हैं।

प्रदेश के 17 जिलों में इस योजना के तहत किसानों को मिनी ट्रैक्टर अनुदान पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। धौलपुर में मिनी ट्रैक्टर के लिए 5 आवेदन आए। हमें योजना में पहली बार 3 मिनी ट्रैक्टर देने का लक्ष्य मिला था। लॉटरी के जरिए 3 मिनी ट्रैक्टर बांट दिए गए। किसानों का उत्साह देखते हुए अगली बार लक्ष्य बढ़ाया जाएगा। बागवानी व सब्जी उत्पादक किसानों के लिए यह काफी उपयोगी है।

बृजेंद्र मीणा, सहायक कृषि अधिकारी, हॉर्टिकल्चर, धौलपुर

प्रदेश में 46 मिनी ट्रैक्टर बांटने का लक्ष्य

इस परियोजना के तहत पहली बार धौलपुर, अजमेर, बांसवाड़ा, बारां, बीकानेर, अलवर, सवाईमाधोपुर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, जयपुर, जैसलमेर, झालावाड़, कोटा, नागौर, प्रतापगढ़ व श्रीगंगानगर में किसानों को कुल 46 मिनी ट्रैक्टर वितरित करने का लक्ष्य था।

सृष्टि एग्रो
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
मोबाइल : 7728897568
jaipur@srushtiagronews.com
विज्ञापन मात्र एक कॉल की दूरी पर

उदित ओवरसीज प्रा.लि.

राजस्थान सरकार द्वारा उर्वरक अब मान्यता प्राप्त दरों व अनुदान पर उपलब्ध

फर्टिलाइजर
1. जिंक सल्फेट 21 प्रश.
2. जिंक सल्फेट 33 प्रश.
3. फेरस सल्फेट 19 प्रश.
4. कॉपर सल्फेट 24 प्रश.
5. मैग्नीशियम सल्फेट 9.6 प्रश.

बायो फर्टिलाइजर
1. राइजोबियम पाउडर
2. एजेटोबेक्टर पाउडर
3. पी.एस.बी. पाउडर

FERTILIZER
- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- FERROUS EDTA 12%
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

BIO FERTILIZERS
- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPHATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)

WELCOME INQUIRY Contact : 7975653498 (Rajesh

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

33 प्रतिशत से ज्यादा फसल खराबा होने पर आपदा राहत कोष में शामिल करने का प्रावधान : सैनी

जयपुर। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने विधानसभा में स्पष्ट किया कि जिन किसानों की फसलों का बीमा नहीं है उन किसानों की फसल के नुकसान का मुआवजा देने का प्रावधान नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना-2016 के तहत जिन किसानों ने बीमा करवा रखा है उनका तथा स्वैच्छिक रूप से किसानों को शामिल करने का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि जिन किसानों ने कोई बीमा नहीं करवा रखा है उनको 33 प्रतिशत से ज्यादा फसल खराबा होने पर आपदा राहत कोष में शामिल करने का प्रावधान है। उन्होंने बताया कि संरक्षित खेती जैसे ग्रीन हाउस, शैड नेट के लिए ऑनलाइन आवेदन मांगे जाते हैं और जिला, तहसील और गांवों के लक्ष्य के आधार पर इन्हें आवंटन में वरीयता दी जाती है। इससे पहले विधायक हरिसिंह रावत के मूल प्रश्न का जवाब देते हुए सैनी ने कहा कि विधान सभा क्षेत्र भीम में कृषि बीमा योजना के सम्बन्ध में विगत तीन वर्षों में कोई परिवाद दर्ज नहीं हुए हैं। विधान सभा क्षेत्र भीम में विगत तीन वर्षों में संचालित की गई। उन्होंने बताया कि कृषि बीमा योजना के तहत बीमित कृषक, बीमा क्लेम व लाभान्वित कृषकों का तहसीलवार विवरण सदन की पटल पर रखा। उन्होंने कृषि बीमा योजना के तहत पृथक से प्रोत्साहन राशि दिए जाने का प्रावधान नहीं है। उन्होंने विगत तीन वर्षों में विधानसभा क्षेत्र भीम में संचालित कृषि बीमा योजना के प्रीमियम में राज्य सरकार व केन्द्र सरकार द्वारा देय अनुदान का विवरण भी सदन की मेज पर रखा।

इंडियन पोटाश लिमिटेड ने आयोजित की वृहद किसान संगोष्ठी

चोमू (विसं)। किसानों को उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देशय से इंडियन पोटाश लिमिटेड ने जयपुर के धोबलाई गांव में एक किसान संगोष्ठी का आयोजन किया। इंडियन पोटाश लिमिटेड के अधिकारियो ने विधिवत तरीके संगोष्ठी का शुभारम किया। आस-पास के सैकड़ों किसान भारी उत्साह संगोष्ठी में भाग लेने पहुंचे। एक दिवसीय इस आयोजन में इंडियन पोटाश लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉक्टर पीएस गहलोत ने भी शिरकत की और किसानों से बातचीत की। पहली बार आयोजित हुई इस वृहद किसान संगोष्ठी में देश-विदेश के कृषि वैज्ञानिकों, मृदा विशेषज्ञ, पोटाश विशेषज्ञ, अनुशंधानकर्ता और राज्य के किसानों ने भाग लिया। भारत और बेलारुश के बीच हुए गठ्बंधन के तहत बेलारुश की एलीना कुंद्रावेट्स ने संगोष्ठी में भाग लिया और किसानों को पोटाश के बेहतर उपयोग के विषय में जानकारी दी। किसानों को उर्वरकों और खासकर पोटाश के बारे में सही जानकारी होना बहुत जरुरी हैं। उन्होंने यह भी बताया की पोटाश के उपयोग से किसान अपनी पैदावार को दुगनी तक कर सकते हैं। पोटाश के प्रयोग से फसल उन्नत किसम की होती हैं। संगोष्ठी में जमीनी स्तर पर काम करने वाले किसानो की कृषि संबॉधित समस्याओं के समाधान के बारे में विचार विमर्श किया गया। किसानों को सम्बोधित करते हुए चूरू विधायक रामलाल शर्मा ने कहा आज के किसान खेती के पुराने तरीके छोड़ कर नई तकनीक और उर्वरक अपनाये और देश को समृद्धि के रस्ते पर चलने में सहायता करे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी कृषि में नई तकनीकों के उपयोग पर जोर दिया हैं जिसके चलते पोटाश एक बेहतर विकल्प साबित हो सकता हैं।

किसान दंपती को राजस्थान कृषि वैज्ञानिक अवार्ड से नवाजा

सीकर (विसं)। पीसी पीक अनुसंधान अकादमी एवं रिसर्च विश्वविद्यालय उदयपुर में हुए दो दिवसीय किसान वैज्ञानिक राष्ट्रीय मंथन एवं सम्मान समारोह में सीकर जिले के किसान दंपती रामकरण व संतोष खेदड़ को राजस्थान कृषि वैज्ञानिक सम्मान से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान कृषि एवं भारतीय कृषि शिक्षा अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक एनएस राठौड़, डॉ. बीपी शर्मा व राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति एके जैन ने प्रदान किया।

वल्लभनगर के सियाखेड़ी में खुलेगा तीसरा कृषि विज्ञान केंद्र

चित्तौड़गढ़ (विसं)। संसदीय क्षेत्र में एक और कृषि विज्ञान केंद्र खोलने की स्वीकृति केंद्र सरकार के कृषि मंत्रालय ने जारी की है। ये नया कृषि विज्ञान केंद्र वल्लभनगर के सियाखेड़ी में खुलेगा।

सांसद सीपी जोशी ने बताया कि पूर्व में संसदीय क्षेत्र के चित्तौड़गढ़ व प्रतापगढ़ में कृषि विज्ञान केन्द्र संचालित हैं। किंतु संसदीय क्षेत्र के विधानसभा वल्लभनगर व मावली में किसानों के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र की सुविधा नहीं थी। इस कारण सरकार की योजनाओं से यहां के किसान वंचित रह जाते थे। किसानों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार ने वल्लभनगर तहसील के सियाखेड़ी गांव में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्वीकृति जारी की है। वल्लभनगर विस क्षेत्र के 65 हजार 496 हेक्टेयर एवं मावली विस क्षेत्र में 59 हजार 866 हेक्टेयर भूमि पर कृषि कार्य होता है।

किसानों के लिए अपनी भूमि की गुणवत्ता की जानकारी एवं उस भूमि के अनुसार उपयुक्त खेती की जानकारी का अभाव उनके आमदनी पर पड़ता हैं।

मंडी कर्मचारियों को भी दिया जाए सातवें वेतन आयोग का लाभ

कोटा (विसं)। राजस्थान कृषि उपज मंडी समिति (सेवारत व सेवानिवृत्त) कर्मचारी संघ ने सरकार से राज्य सरकार के कर्मचारियों के अनुरूप 7वें वेतन आयोग का लाभ देने की मांग की है।

संघ के प्रदेश संयोजक श्रीनाथ गौत्तम ने बताया कि मांग को लेकर सीएम, कृषि मंत्री, मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव कृषि एवं निदेशक, कृषि विपणन निदेशालय जयपुर को पत्र भेजा है। उन्होंने बताया कि मंडी समिति कर्मचारी मेहनत कर मंडी शुल्क द्वारा प्रतिवर्ष राजस्व की बढ़ोतरी करते हैं। इसका 30 प्रतिशत राज्य कृषि विपणन बोर्ड को दिया जाता है। इसको मार्केटिंग बोर्ड एवं निदेशालय के कर्मचारियों का संस्थापन कार्य में लिया जाता है।

वर्तमान में उक्त दोनों संस्थाओं के कर्मचारियों को 7वें वेतनमान का लाभ दिया जा चुका है। जबकि पहला बिंदु पर आय एकत्रित कर राजस्व देने वाली संस्था के कर्मचारियों को इससे वंचित किया जा रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि राज्य सरकार ने मांग पूरी नहीं की तो आगामी माह में संघ आंदोलन करेगा।

बांसवाड़ा की धरा पर लहलहाने लगी किनोवा की फसल

बांसवाड़ा (विसं)। लोहारिया में किसान नाथू ने नवाचार के रूप में कृषि विभाग की सहायता से अपने खेत में किनोवा की नई फसल का उत्पादन किया है। बांसवाड़ा में पहली बार यह फसल उगाई जा रही है। इसका उत्पादन प्रति बीघा डेढ़ क्विंटल तक होता है। इसकी कीमत 700 रुपए प्रति किग्रा तक होती है। यह सुपर फूड फसल है, इस पर डोडा लगता है, जिसका वनस्पति नाम चिनोपोदिम है। यह फसल मूल रूप से दक्षिण अमेरिका, इंडोनेशिया व कनाडा में होती है। इस फसल के लिए रात में ठंड व दिन में 35 डिग्री तापमान जरूरी है। इसकी बुआई फरवरी-मार्च तक की जा सकती है। सरपंच लक्ष्मण मकवाना ने बताया कि लोहारिया में किनोवा की फसल का पहली बार उत्पादन किया गया है। कृषि पर्यवेक्षक हीरालाल पांचाल ने बताया कि लोहारिया क्षेत्र में करीब 2 हेक्टेयर में यह फसल की गई है।

राजस्थान के मंत्री और विधायक पीएंगे ऑलिव-टी

जयपुर (कार्स)। राजस्थान के मंत्री और विधायक अब ऑलिव-टी का स्वाद लेंगे। राजस्थान में उत्पादित ऑलिव-टी को बढ़ावा देने के लिहाज से प्रदेश के कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने सभी मंत्रियों और विधायकों को यही चाय पीने का आग्रह किया है। सैनी ने सभी मंत्रियों और विधायकों को ऑलिव-टी के पैकिट भेजकर आग्रह किया है कि वे भविष्य में बाजार से यही चाय खरीदें। सैनी ने मंत्रियों और विधायकों से यह चाय पीने के बाद फीड बैक देने का भी आग्रह किया है । सैनी द्वारा भेजे गए ऑलिव-टी के पैकिट्स के साथ एक पत्र भी भेजा गया है, जिसमें इसके उपयोग के फायदे बताए गए हैं।

रामचन्द्र ने किया नवाचार, लहलहाने लगे अनार के पौधे

मेड़तासिटी (विसं)। नागौर जिले के मेड़ता तहसील का छोटा सा गांव हैं शेखासनी। यह इलाका चाइना क्ले के लिए प्रसिद्ध है। यहां का खनिज चाइना क्ले बांग्लादेश तक जाता है। इस इलाके में किसी किसान ने अनार की फसल लेने की कल्पना भी नहीं की होगी। साढ़े तीन साल पहले शेखासनी के रामचंद्र बेड़ा ने बागवानी मिशन के तहत अपने खेत में अनार के पौधे लगाए। पहले ही साल पौधों ने आकार ले लिया। हालांकि समूचा इलाका बारिश पर निर्भर है। यहां नहरी सिंचाई जैसी सुविधा नहीं है लेकिन रामचंद्र बेड़ा व उसके परिजनों ने अनार के पौधों की समय-समय सिंचाई कर उन्हें आकार दिया। विगत साल एक पेड़ पर करीब 25-30 किलो अनार लगे। उन्होंने इन्हें बाजार में नहीं बेचा बल्कि आसपास बांट दिए। ये अनार आर्गेनिक था। अब अनार के पौधे साढ़े तीन के हो चुके हैं। करीब 500 अनार के पौधे धीरे-धीरे पेड़ों की शक्ल ले रहे हैं। इससे बेड़ा परिवार खुश है।

5 साल का पेड़ देगा अच्छी आमदनी : बेड़ा ने बताया कि फिलहाल साढ़े तीन की कड़ी मेहनत से अनार खाने लायक स्थिति में आ गए हैं। फल भी मीठा निकल रहा है। आने वाले दो सालों में ये सभी 500 पौधे सामान्य रूप से पेड़ में तब्दील हो जाएंगे। इसके बाद उनके खेत से करीब 200 क्विंटल अनार उत्पादन की संभावना है।

एक-एक पेड़ से 40 किलो अनार होने की उम्मीद

इस किसान परिवार के सदस्यों ने बताया कि उन्हें हरेक पेड़ से 40 किलो से ज्यादा अनार होने की उम्मीद है। बाजार में ये अनार 70 से 90 रुपए प्रति किलो बिकने की संभावना है। बेड़ा ने बताया कि इस एरिया में चाइना क्ले का ही धंधा चलता है। ऐसे में अनार जैसे दुरह फल की फसल पकने की कोई सोच नहीं सकता था मगर लगातार नजर रखने व समय पर पानी देने यह संभव हुआ।

प्याज और लहसुन के प्रसंस्करित उत्पाद

राजेश कुमार मीना,राजवीर यादव
सैमहिग्गिंबोटोम यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी एंड साइंस इलाहाबाद (उ.प्र)

प्याज व लहसुन दोनों ही महत्वपूर्ण फसलें हैं, जिनका उपयोग दैनिक जीवन में सलाद, सब्जियों, मसाला एवं सॉस आदि अनेक रूपों में होता है। प्याज व लहसुन से हमारे देश को काफी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है, साथ ही प्रसंस्करण उद्योग को भी बढ़ावा मिल रहा है, जिससे रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। प्याज एवं लहसुन मुख्यत: रबी की फसलें हैं। प्याज व लहसुन की आवश्यकता वर्ष भर होती है, परन्तु इसमें पानी की मात्रा अधिक होने के कारण वर्ष भर भण्डारण करना सम्भव नहीं है। भण्डारण हेतु प्याज की उपयुक्त जाति का चुनाव, उसकी सस्य क्रिया, खेत में खुदाई उपरान्त अच्छी तरह से सुखाना व उसके पश्चात् उपयुक्त भण्डारगृह में सही तरह से रखा जाये तो रबी प्याज को पांच से छ: महीने तक भंडारित करना सम्भव है। इसके बावजूद इसमें वजन में कमी, सड़ना व अंकुरण आना आदि से कुछ नुकसान लगभग 20 से 25 प्रतिशत तो होता ही है, साथ ही भण्डारण हेतु अधिक स्थान की आवश्यकता होती है। यदि हम प्याज व लहसुन को प्रसंस्करित करके रखें तो भण्डारण के समय होने वाले नुकसान को बचाया जा सकता है व इन उत्पादों को अच्छी तरह भण्डारित किया जाये तो एक से डेढ़ वर्ष तक कम क्षेत्र में अच्छी तरह रखा जा सकता है।

प्याज व लहसुन का प्रसंस्करण करके विभिन्न उत्पाद बनाये जाते हैं। प्याज व लहसुन का पाऊडर, सॉस, सूप एवं मसाला उद्योग में भी उपयोग में लाया जा रहा है। प्याज व लहसुन की प्रसंस्करण प्रक्रिया संक्षेप में आगे दी गयी है:-

प्याज व लहसुन का तेल: प्याज व लहसुन का तेल उसे महीन कर उर्ध्वपतन विधि द्वारा निकला जाता है। यह तेल पीला रंग लिए होता है। यह प्याज की विभिन्न जाति, उत्पादन विधि, लगाये जाने वाले मौसम इत्यादि पर निर्भर करता है। इस तेल का उपयोग विदेशों में एल्कोहोलिक पेय (मदिरा), आईसक्रीम, मसाला, च्विंगम, बेकरी उत्पाद, अचार व मांस के विभिन्न पदार्थ बनाने में उपयोग में लाया जाता हैं। प्याज व लहसुन के तेल की तीव्रता बहुत अधिक होती है इसलिए इसका उपयोग लवण के रूप में, डेक्सट्रोज, शर्करा अथवा वनस्पति तेल में सांद्रता कम करके या फिर खाने के गोंद या पॉलीमर के केप्स्यूल बनाकर उपयोग में लाया जाता है। इस तेल में मुख्यत: डाईएलाइल डाईसल्फाइड, डाईएलाइल ट्राईसल्फाइड, एलाइल प्रोपाइल डाईसल्फाइड व कुछ मात्रा में डाईइथाइल डाई सल्फाइड व डाई एथाइल पॉलीसल्फाइड रहता है।

प्याज व लहसुन का रस: प्याज व लहसुन का रस निकलने के लिए इसे बारंबार140ए से 160ए सेंटीग्रेड तापमान पर 'फ्लेश हीटिंग' व 40ए सेंटीग्रेड तापमान पर ठण्डा करके निकाला जाता है। इस रस में स्वाद व गन्ध देने वाले तत्व व कुछ मात्रा में शर्करा होती है। इस गर्द भूरे रंग के रस में प्रोपीलीन ग्लूकोज, लेसीथीन अथवा ग्लूकोज डालकर ओलियोरेजिन प्राप्त किया जाता है। प्याज के रस की तीव्रता प्याज के पाउडर की तुलना में 10 गुणा अथवा ताजे प्याज के 100 गुणा तक रहती है। लहसुन के ओलियोरेजिन की तीव्रता सुखाये हुए लहसुन से 12 गुणा अथवा ताजे लहसुन की कलियों से 50 गुणा अधिक होता है।

प्याज व लहसुन के सुखाये गए उत्पाद :

सूखे हुए प्याज व लहसुन में पोषण संघटकों की उपलब्धता (प्रतिशत में) की तुलना :

क्र.सं.	विवरण	पानी (नमी)	प्रोटीन	वासा	कार्बोहाइड्रेट	राख
1.	कच्चा प्याज	93	0.9	---	5.0	---
2.	सुखाया हुआ प्याज	6.0	23	0.5	65	3.3
3.	कच्चा लहसुन	63	0.6	0.10	29	1.5
4.	सुखाया हुआ लहसुन	5	17	0.60	71	3.5

प्याज व लहसुन को सुखाकर उसके अलग - अलग उत्पाद बनाये जाते हैं। अपने देश में ही महाराष्ट्र व गुजरात में प्याज व लहसुन सुखाने हेतु उद्योग स्थापित हैं। प्याज सुखाने के लिए सफेद रंग के प्याज की आवश्यकता होती है। इसमें कुल घुलनशील ठोस पदार्थ 18 प्रतिशत से अधिक हो तो लाभदायक होता है, क्योंकि इसमें सूखे हुए प्याज का प्रमाण अधिक प्राप्त होता है।

प्याज व लहसुन के सुखाये गए उत्पादों का उपयोग सीधे सलाद, सूप, हैमबर्ग, पिज्जा, सूप पाऊडर व अलग प्रकार के सॉस, डिब्बाबंद सूखे अथवा शीतलीकृत मिश्रित सब्जियों की कैनिंग, केसरोल, फास्टफूड एवं मांस के द्वारा बनाये गए विभन्न उत्पाद आदि में किया जाता है।

प्याज के सुखाने की प्रक्रिया

-उपयुक्त प्याज का चयन करना

-प्याज की गर्दन व आधार का कुछ भाग काटकर निकालना

-साफ पानी में धोकर 2 से 3 मिनट उबलते पानी में डुबोना अथवा गर्म पानी की भाप देना

-प्याज ठण्डा होने पर ऊपर का छिलका निकालना

-प्याज की खड़ी/अजि काट लगाकर टुकड़े करना या चक्कियाँ बनाना

-एक समान पतली परत बनाकर जालीदार या छिद्रयुक्त ट्रे में बिछाना

-0.1 ग्राम पोटेशियम मेटाबाईसल्फाइड + 5 ग्राम नमक + 0.1 ग्राम सिट्रिकअम्ल लेकर एक लीटर पानी में पानी में घोलकर प्रति 10 कि.ग्रा. प्याज की दर से मिलाना या छिड़कना

(यह मिश्रण मिलाने से भण्डारण क्षमता अधिक होती है।)

-केबिनेट ड्रायर में 40ए सेंटीग्रेड + 2ए सेंटीग्रेड तापमान पर 25 से 30 घन्टे या 45ए से 46ए सेंटीग्रेड तापमान पर 16 से 18 घन्टे सुखाना

-सुखाये गए प्याज को आवश्यकतानुसार विभिन्न आकार में टुकड़े करना या पाऊडर बनाना। इन पदार्थों को तुरन्त हवा रहित 300 से 400 गेज मोटाई की पॉलिथीन की थैलियों में अथवा डिब्बे में बंद करना

-इस प्रकार सुखाये हुए पदार्थों को 12 से 15 महीने तक रख सकते हैं।

प्याज व लहसुन का अचार:

कुछ देशों में प्याज व लहसुन के अचार की बहुत अधिक माँग है व इन्हें चाव से खाया जाता है । प्याज का अचार बनाने के लिए विशेषकर सफ़ेद रंग के छोटे आकार के (3 से 3.5 सेमी व्यास वाले) प्याज उपयोग में लाये जाते हैं । इन प्याज के ऊपर का छिलका उतारकर 10 प्रतिशत नमक के द्रवण में 22 से 86 घन्टे डुबोकर किण्वित किया जाता है। किण्वित करते समय थोड़ी मात्रा में लेक्टिक अम्ल भी डाला जाता है। नमकीन अचार हेतु नमक का द्रवण व विनेगर का उपयोग किया जाता है। लहसुन के अचार हेतु कलियों को छीलकर नमक के द्रवण में किण्वित किया जाता है और उसमे स्वादानुसार महीन किये हुए मसाले, तेल, साईट्रिक अम्ल अथवा लेक्टिक अम्ल, नमक व खाद्य पदार्थ में उपयोग में लाये जाने वाला प्रिजर्वेटिव डाला जाता है। इस प्रकार तैयार अचार को निर्जिवीकरण की हुयी बोतलों में मुंह तक भरकर उसमे गर्म किया हुआ खाने का तेल इस प्रकार भरते हैं की उसमें किसी तरह से हवा ना रहे और बाद में उसका ढक्कन बंद कर दिया जाता है। इन बोतलों पर लेबल लगाकर खोके में बंद करके बाजार में भेजा जाता है।

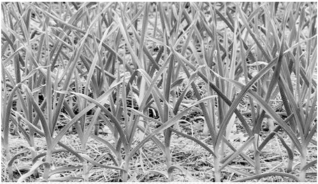

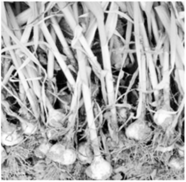

अजौलाः पशुओं के लिए उत्तम पौष्टिक आहार

हुकम सिंह कोठारी1, डॉ. के. सी. मीना2, एवं डॉ. बी. एल. मीना3 डॉ. राम आसरे4
(1 तिलहन तकनीकी सहायक एवं 2, 3 सहायक आचार्य तथा 4 वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष) कृषि विज्ञान केन्द्र, सवाई माधोपुर

भारत देश में किसानों को अपनी आय दुगुनी करने के लिए खेती के साथ-साथ पशुपालन व्यवसाय को भी अपनाना आवश्यक है। सामान्य तौर पर लधु एवं सीमान्त किसान कृषि के साथ-साथ 1-2 पशु को पालते है। पशुपालन व्यवसाय से अधिक आमदनी प्राप्त हो इसके लिए किसान को पशुओं के खानपान पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। पशुओं से अधिक दुग्ध उत्पादन एवं अधिक आय प्राप्त करनें के लिए हरे चारे को पशुओं के दैनिक आहार के रूप में सम्मिलित करना अति आवश्यक होता है। गर्मी के दिनों में किसान रिजका एवं बरसीम का उपयोग पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में करते है। अजौला का उपयोग दुधारू पशुओं के साथ-साथ खरगोश, मुर्गी तथा मछली के लिए एक पौष्टिक आहार होता है। यह एक नई तकनीक है जिसके माध्यम से पशुओं में विटामिन, प्रोटीन, तथा अमीनों अम्ल की पूर्ति की जाती है। अजौला उत्पादन को बड़े पैमाने पर विकसित करने के लिए भारत सरकार के विभिन्न कृषि संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र एवं राजस्थान सरकार के कृषि विभाग, आदि द्वारा समय-समय पर कृषक प्रशिक्षण आयोजित किए जाते है। इसे पशुओं को या तो सीधे रूप में या फिर सुखे चारें में मिलाकर खिलाया जा सकता है।

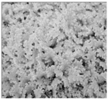

अजौला क्या है: अजौला समशीतोष्ण जलवायु में पायी जाने वाली फर्न होती है जो धान की खेती में काम आती है। यह फर्न पानी पर एक परत के रूप में तैरती हुई दिखाई देती है। इस फर्न के निचले वाले भाग में नील हरित शैवाल (साइनोबैक्टीरिया) सहजीवी रूप में पाया जाता है। जो वायुमण्डल में स्थित नाईट्रोजन को प्राप्य अवस्था में पौधों को उपलब्ध करवाता है। इसके उपयोग से पौधों में लगभग 25 किलो नाईट्रोजन की बचत होती है। पशुओं के लिए आवश्यक विटामिन, प्रोटीन, तथा अमीनों अम्ल आदि अजौला में पाए जाते है। अजौला में सामान्यत 30-35 प्रतिशत प्रोटीन, 10-15 प्रतिशत खनिज लवण, 10 प्रतिशत अमीनों अम्ल, आवश्यक विटामिन, एवं फास्फोरस, पौटेशियम, कॉपर, मैग्निशियम आदि तत्व पाए जाते है।

अजौला उत्पादन की विधि: किसान को अजौला का उत्पादन शुरू करने से पहले स्थान का चुनाव करना आवश्यक होता है। स्थान का चुनाव करते समय किसान को यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि स्थान छायायुक्त हो तथा साथ ही जमीन में खरपतवार नहीं हो। स्थान का चुनाव करने के बाद किसान को 10 फीट लम्बी, 3 फीट चौड़ी, एवं 1 फीट गहरी क्यारी बना लेंवे। क्यारी बनानें के बाद इसमें 120 गेज की सिलपुलिन शीट को बिछा देंवे तथा इसके बाद 500 लीटर पानी की मात्रा को क्यारी में भर देंवे। 100 किलो मिट्टी एवं 10 किलो 5 दिन पुरानी गोबर की खाद का मिश्रण तैयार करके इस क्यारी में डाल देंवे। इसके बाद 2 किलो अजौला को मिट्टी व गोबर की खाद से मिश्रित पानी में डाल देवें। अजौला उत्पादन इकाई लगानें के 21वें दिन से 2 किलो अजौला रोज प्राप्त की जा सकती है।

पशुओं के हरे चारे में अजौला उपयोग के फायदे: अजौला का उपयोग पशुओं में करनें पर दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है। पशुओं में इसका उपयोग दाना मिश्रण के साथ 2 सें 2.5 किलो के हिसाब से किया जाता है जिससे पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता में 15 प्रतिशत की वृद्धि होती है। बकरी एवं भेड़ में अजौला का उपयोग 250 ग्राम प्रतिदिन के रूप में किया जाता है जिससें इनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

कृषि सलाह किसान भाई ध्यान देवें

ग्रीष्मकालीन भिण्डी: ग्रीष्मकालीन भिण्डी की बुवाई का उचित समय है। पूसा सावनी, पूसा मखमली ,परभनी, क्रान्ति, अर्का अभय व अर्क अनामिका भिण्डी की उन्नत किस्में हैं। भिण्डी की बुवाई हेतु बीज दर 20 किलाग्राम प्रति हैक्टेयर रखें एवं बुवाई से पूर्व बीजों का एक ग्राम कार्बन्डेजिम व 3 ग्राम थाइरम का प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

अगेती बोई गई सब्जिया: कुष्माण्ड कुल की अगेती बोई गई सब्जियों में लाल भृंग कीट के प्रकोप की सम्भावना है। कीट अंकुरित एवं नई पत्तियों को खाकर छलनी कर देता है। इस कीट का प्रकोप दिखाई देने पर कार्बोरिल 5 प्रतिशत चूर्ण का 20 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भूरकाव करें या ऐसीफेट 75 एस.पी. आधा ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें ।

आम: आम की फसल में फुदका (हॉपर) कीट के प्रकोप की सम्भावना है । यह कीट फूलों, कोमल फलों एवं पत्तियों का रस चूसता है । इस कीट के नियंत्रण हेतु मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें ।

पपीता: पपीते की फसल में पर्ण कुचंन व मोजेक रोग के प्रकोप की सम्भावना है। इन रोगों के लक्षण दिखाई देते ही रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देवे तथा रोग के प्रसार को रोकने हेतु कीटनाशी डाइमिथोऐट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटॉन 25 ई.सी. एक मि.ली. प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें। फ्ल लगने के बाद मैलाथियॉन 50 ई.सी का 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी का घोल बना कर छिड़काव करें।

पशुः पशुपालकों को मुंहपका एवं खुरपका रोग के प्रति टीकाकरण करवाने का उचित सलाह दी जाती है। यदि पशु के रोग आ गया है तो उसे अन्य पशुओं से अलग रखे तथा उसके छालों को 0.1 प्रतिशत लाल दवा के घोल से धोये तथा निकट के पशु चिकित्सक की सलाह से एन्टीबायोटिक दवा दिलावें।

कृषकों को प्रदान किए रोटावेटर

बूंदी (विसं)। राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्धात्मक परियोजना (आरएसीपी) के तहत गुढाबांध क्षेत्र के गांव ठीकरदा, मांगलीकला, बड़ा नया गांव एवं सथूर के 6 कृषकों को 75 प्रतिशत अनुदान पर रोटावेटर उपलब्ध करवाए गए। बूंदी विधायक अशोक डोगरा ने कृषकों को रोटावेटर एवं स्वीकृत अनुदान की स्वीकृतियां वितरित कीं।

पाक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो के स्वामित्व व अन्य विषयों से संबंधित विवरण

घोषणा

फार्म-4

1. प्रकाशन का स्थान	जयपुर
2. प्रकाशन अवधि	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	विकाश शर्मा
(क्या भारत का नागरिक है?)	हां
पता	प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मण्डी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया जयपुर-302039
4. प्रकाशक का नाम	विकाश शर्मा
(क्या भारत का नागरिक है?)	हां
पता	प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मण्डी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया जयपुर-302039
5. सम्पादक का नाम	सुरेश जी. शर्मा
(क्या भारत का नागरिक है)	हां
पता	प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मण्डी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया जयपुर-302039
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो	सुरेश जी. शर्मा प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मण्डी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039

मैं विकाश शर्मा एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

विकास शर्मा

दिनांकः 16.3.2018

प्रकाशक के हस्ताक्षर

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम : ....
संस्था का नाम : ....
पूरा पता : ....
ग्राम : ....तहसील ....
जिला .... राज्य .... पिन कोड
दूरभाष कार्य : .... निवास ....

सदस्यता राशि

एक वर्ष : 151 तीन वर्ष 351 पांच वर्ष 501
कृपया हमें/मुझे सृष्टि एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।
सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में) शब्दों में ....
बैंक का नाम .... ड्राफ्ट चेक क्रमांक .... दिनांक ....
स्थान .... प्रतिनिधि का नाम .... हस्ताक्षर सदस्य ....
दिनांक ....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड़ (प), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

सरसों की नई किस्म सीएस-60 विकसित

करनाल (विसं)। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व यूपी के किसानों के लिए अच्छी खबर है। किसान कलर भूमि में भी सरसों की अच्छी फसल ले सकेंगे। आईसीएआर-केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (सीएसएसआरआई) करनाल ने सरसों की एक नई लवण सहिष्णु किस्म सीएच 60 विकसित की है। इस किस्म को तीन सालों तक राष्ट्रीय स्तर पर मृदा लवणता और क्षारीयता परीक्षणों में सही पाया गया है। सीएस 54 क्रांति और गिरिराज की तुलना में प्रति हेक्टेयर 25 प्रतिशत अधिक बीज ऊपज और 27 प्रतिशत अधिक तेल उपज देने के कारण हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब और राजस्थान की लवण ग्रस्त जमीन के लिए यह सही है। बिजाई के लिए फसल मानक केंद्रीय उप-समिति (सीवीआरसी) ने वर्ष 2018 में इस किस्म को जारी किया गया है।

तेल की है अधिक मात्रा: सीएच 60 में लगभग 41प्रश. तेल की मात्रा है। लवण प्रभावित जमीन और क्षारीयता (पीएच 9.5 तक) में उपज 19 से 22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर। सामान्य परिस्थितियों में 25-29 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। 125-132 दिनों में तैयार हो जाती है। पौधों की लंबाई 182-187 सेंटी मीटर, 1000 दानों का वजन 5.0-5.5 ग्राम है।

नहीं आती बीमारी: अल्टरनेरिया ब्लाइट, सफेद रतुआ, पाउडरी और डाउनी मिलडिउ (फफूंदी), स्टैग हेड एवं स्क्लेरोटिनिया तना गलन के लिए प्रतिरोधी है तैला (एफिड) प्रकोप भी कम होता है।

कलर भूमि व खारे पानी में भी अच्छी पैदावार होगी : लवण ग्रस्त मिट्टी एवं जल में सरसों की सामान्य किस्में या तो अंकुरित ही नहीं होती या फिर उनका उत्पादन बहुत ही कम होता है, जिसके कारण किसानों को बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। सरसों की लवण सहिष्णु किस्म की बिजाई करने से प्रति हेक्टेयर किसानों को अधिक उपज प्राप्त होती है एवं लगभग 25 से 27 हजार रुपए आर्थिक लाभ होता है।

इस किस्म को वैज्ञानिकों की टीम जिसमें डॉ. जोगेन्द्र सिंह , डॉ. पीसी शर्मा आईसीएआर-केंद्रीय.मृदा लवण अनुसंधान संस्थान- करनाल, डॉ. सत्यवान चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार, डॉ. वाई पी सिंह आईसीएआर-केंद्रीय मृदाल लवण अनुसंधान क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र लखनऊ और डॉ. एसके चौहान एआईसीआरपी -ल.प्र.मृ. एवं ज आगरा केन्द्र के वैज्ञानिक शामिल रहे।

भिंडी व टिंडे की नई किस्में विकसित

जयपुर (कासं)। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (पूसा) नई दिल्ली की ओर से भिंडी व टिंडे की नई किस्में विकसित की गई हैं। इनमें पूसा भिंडी-5 और टिंडे के लिए पूसा रौनक किस्म है। पूसा भिंडी 5- यह पीली शिरा वाले चित्ती विषाणु रोग की प्रतिरोधी है। इसकी भिंडियां आकर्षक गहरे रंग की होती हैं। इनमें 5 उभार होते हैं। लम्बाई करीब 10 से 12सेंटीमीटर तक होती है। इस किस्म की भिंडी बुआई के करीब 40 से 45 दिन के बाद पहली तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं। खरीफ के साथ-साथ इसे गर्मी के मौसम में भी उगाने की सिफारिश की जाती है। इसकी औसतन उपज 18 टन प्रति हैक्टेयर तक होती है। पूसा रौनक- यह टिंडे की अगेती किस्म है। इसके फल बुआई के 55 से 60 दिन बाद पहली तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इसकी प्रत्येक बेल में 8 से 10 फल लगते हैं, जो आकर्षक हरे रंग के चमकदार, समरूप, आकृति में चपटे गोल, करीब 5 सेंटीमीटर व्यास के और मुलायम रोम से ढके होते हैं। इन फलों का गूदा सफेद व मुलायम होता है। इसमें बीज बहुत कम होते हैं। फलों का औसत वजन 60 ग्राम तक होता है। इसकी औसत उपज 7.5 टन प्रति हैक्टेयर तक होती है।

किसानों पर कुदरत की मार, अब तापमान ने बढ़ाई चिंता !

जयपुर। प्रदेश के किसानों पर कुदरत की मार जारी है। ओलावृष्टि के बाद अब अचानक बढ़ा हुआ तापमान किसानों की मुसीबत बढ़ा रहा है।

राजस्थान में दिन का तापमान करीब 34 से 35 डिग्री के आसपास पहुंच गया है जिसके चलते गेहूं का उत्पादन 15 से 20 फीसदी तक कम होने की आशंकाएं पैदा हो गई हैं।

कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि तापमान ज्यादा होने से गेहूं का दाना सिकुड़ रहा है जिसके चलते उत्पादन में कमी आएगी। किसानों का कहना है कि गेहूं के सिकुड़े हुए दाने को बाजार में बेचने पर खरीददार नहीं मिलते हैं। ओलावृष्टि से पहले हमारी लगभग आधी फसल खराब हो चुकी है जिसका मुआवजा भी सरकार ने अभी तक नहीं दिया है। ऐसे में अब बढ़ते तापमान ने किसानों की मुसीबत बढ़ा दी है। कृषि वैज्ञानिक होशियार सिंह ने बताया कि 15 मार्च से पहले तापमान 30 डिग्री को पार करना गेहूं की फसल के लिए नुकसानदेह होता है। प्रदेश में इस बार 108 लाख मीट्रिक टन गेहूं उत्पादन का अनुमान लगाया गया था लेकिन तापमान बढ़ने से यह लक्ष्य पूरा नहीं हो पाएगा। कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक जो किसान गेहूं की तापरोधी किस्मों की खेती कर रहे हैं वो इससे अप्रभावित रहेंगे लेकिन ऐसे किसानों की संख्या केवल 30 फीसदी ही है। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी का कहना है कि जलवायु परिवर्तन की वजह से इस तरह की समस्याएं पैदा हो रही हैं और इससे निपटने के लिये विभिन्न स्तरों पर प्रयास करने होंगे।

देश की 250 मंडी ई नाम योजना से जुड़ीं: राधामोहन

नई दिल्ली (विसं) किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलाने तथा पारदर्शी विपणन के लिए देश के 10 राज्यों की 250 मंडी कल तक राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई नाम) से जुड़ गए और मार्च 2018 तक 585 मंडियों को इस योजना से जोड़ने का प्रयास तेज कर दिया गया है। इन मंडियों में आन लाइन व्यापार किया जा सकेगा। कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह ने संवाददाता सम्मेलन में बताया कि आन्ध्र प्रदेश के 12,छत्तीसगढ़ के 05, गुजरात में 40, हिमाचल प्रदेश में 07, हरियाणा में 36, झारखंड में 8, मध्य प्रदेश में 20, राजस्थान में 11, तेलंगाना में 44 तथा उत्तर प्रदेश में 67 मंडी ई नाम योजना से जुड़ गए हैं। अब तक 14 राज्यों ने 399 मंडियों को इस योजना से जोड़ने का प्रस्ताव किया है जिसकी स्वीकृति दे दी गई है। इस वर्ष 14 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस योजना की शुरूआत की थी और 8 राज्यों की 23 मंडियों को पायलट परियोजना में शामिल किया गया था। इस योजना के तहत 160229 किसानों, 46688 व्यापारियों तथा 25970 कमीशन एजेंटों का पंजीकरण किया गया है। इस योजना के तहत ढांचागत संरचना तथा प्रयोगशालाओं के निर्माण के लिए प्रति मंडी 30 लाख रुपए की सहायता राशि दी जाती है।

स्वामी : सुरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं मुद्रक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कीम न्यू लोहामण्डी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा सत्यापित शीर्षक क्रमांक RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com